देश के लिए... अव्यवस्था के खिलाफ...

जवाब दो!!! सरकार
www.jawabdosarkar.com
देश का पहला जवाबदेही पोर्टल

JAWAB DO SARKAR
www.jawabdosarkar.com

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा जारी
सूचना प्रोद्द्योगिकी(मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता)नियम,2021 के नियम 18 के तहत संचालित पोर्टल

रेफरेंस संख्या –2023/rpba/05 | E-Newsletter, Issued in Public Interest | गुरुवार, 16 मार्च 2023

"जाने भी दो यारों" फिल्म के 40 साल!!!

40 साल पहले भ्रष्ट बिल्डरों,सरकारी अधिकारियों,राजनेताओ और मीडिया जगत की करतूतों का बयां करती यह कालजयी रचना आज के समय मे और भी प्रासंगिक!!

इसी भ्रष्ट तंत्र के चलते शहरों को उनके मास्टर प्लान के तहत सुनियोजित तरीके से बसाने की योजना हो रही तबाह!!

*भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत प्रकाशन एवं समस्त प्रकाशन IT Act 2000 के तहत उत्तरदायी सर्वाधिकार@www.jawabdosarkar.com

"जाने भी दो यारों" फिल्म के 40 साल!!!

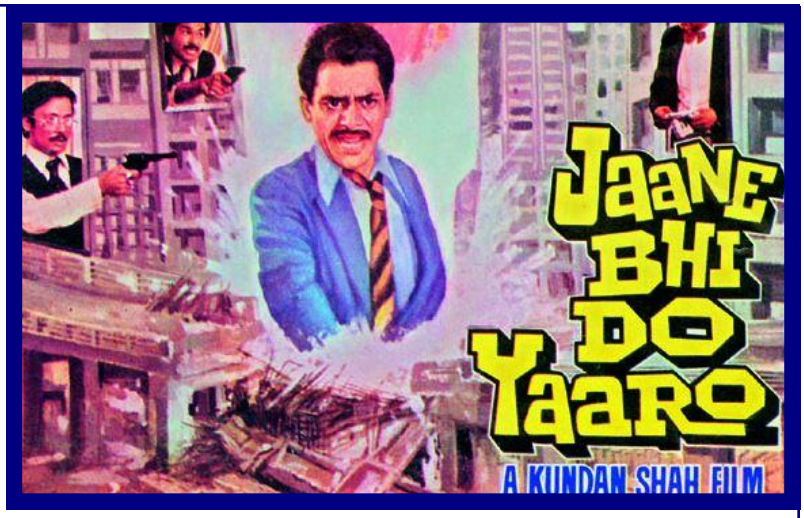

हिंदी की 'कल्ट क्लासिक' फिल्म 'जाने भी दो यारो' का यह चालीसवां साल है. हिंदी सिनेमा के इतिहास में हास्य को लेकर अनेक फिल्में बनी, मगर 'जाने भी दो यारो' जैसी कोई नहीं. जाने भी दो यारो' फिल्म दो संघर्षशील, ईमानदार फोटोग्राफर विनोद और सुधीर की कहानी है, जो एक बिल्डर के भ्रष्टाचार को पर्दाफाश करते हैं. 'हम होंगे कामयाब' के विश्वास के साथ जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं, हम एक ऐसा समाज देखते हैं जिसमें सब कुछ काला है. बिल्डर-कांट्रेक्टर, म्युनिसिपल कमिश्नर और मीडिया के गठजोड़ को फिल्म में बखूबी दर्शाया गया है. डार्क ह्यूमर श्रेणी की इस फिल्म का केंद्रीय बिंदु है: पावर ब्रोकर्स, पावर सेंटर्स का गठजोड़ और मीडिया से उनकी मिलीभगत. यह फिल्म इसलिए भी खास मानी जाती है कि, यह सिस्टम को परत-दर-परत खोलती चली जाती है. निर्देशक कुंदन शाह ने सुधीर मिश्रा के साथ मिलकर फ़िल्म की कहानी भी ख़ुद ही लिखी थी. कुंदन शाह ने इस फ़िल्म के ज़रिए सिस्टम में फ़ैले करप्शन को आम जनता के बीच लाने की शानदार कोशिश की थी. इसके डायलॉग एक्टर-निर्देशक सतीश कौशिक ने लिखे थे|

40 साल पहले भ्रष्ट बिल्डरों,सरकारी अधिकारियों,राजनेताओ और मीडिया जगत की करतूतों का बयां करती यह कालजयी रचना आज के समय मे और भी प्रासंगिक!!

यह कहानी है दो भले फोटोग्राफरों विनोद और सुधीर (नसीरुद्दीन शाह, रवि वासवानी) की, जिन्हें 'खबरदार' की संपादक शोभा (भक्ति बर्वे) खास काम सौंपती है। उन्हें बिल्डर तरनेजा (पंकज कपूर),आहूजा(ओमपुरी) और भ्रष्ट म्यूनिसिपल कमिश्नर डिमेलो (सतीश शाह) की मिलीभगत का भंडाफोड़ करना है। एक दिन अनजाने में विनोद और सुधीर ऐसा फोटो खींच लाते हैं जिसमें तरनेजा एक आदमी का खून करते हुए नजर आ रहा है। खोजबीन करने पर पता चलता है कि खून डिमेलो का हुआ है। वे डिमेलो की लाश ताबूत समेत ढूँढ निकालते हैं लेकिन यह लाश जैसे एक जगह न टिकने की कसम खाकर कब्र से बाहर आई है। वह बार-बार विनोद-सुधीर के हाथ से निकल जाती है और बार-बार वे उसे पुनः हथिया लेते हैं। यहाँ तक कि नशे में धुत एक बिल्डर अहूजा (ओम पुरी) डिमेलो के ताबूत को बिगड़ी कार समझकर अपनी कार से बाँधकर मुंबई की सड़कों पर खींचता चला जाता है।

भ्रष्ट बिल्डरों और अफसरों के शह और मात के खेल में नया कमिश्नर भी शामिल हो जाता है और शोभा भी! फिल्म का क्लाइमेक्स तो दर्शकों को हँसा-हँसाकर लोटपोट कर देता है, जिसमें विनोद व सुधीर लाश को स्केट्स पर चलाकर, बुर्के में ढँककर एक सभागार में ले आते हैं, जहाँ 'महाभारत' का मंचन चल रहा है। पीछे-पीछे तमाम अन्य पात्र भी चले आते हैं। सबको लाश पर कब्जा करना है और लाश इधर-उधर होती हुई चीरहरण के लिए लाई गई द्रौपदी बन मंच पर जा पहुँचती है! उसके पीछे-पीछे सारे अन्य लोग भी अपनी-अपनी सुविधा से कोई रूप धरकर मंच पर आ धमकते हैं और नाटक इस कदर स्क्रिप्ट से भटकता है कि 'महाभारत' से सलीम-अनारकली की दास्तान बन बैठता है! अब तक द्रौपदी का रोल कर रही लाश अब अनारकली बन जाती है...!

'जाने भी दो यारों' यूँ तो रंगमंच और कला फिल्मों से आए मँजे हुए कलाकारों से भरी पड़ी थी और इन सबने अपनी भूमिकाओं में जान फूँक दी थी मगर देखा जाए तो सबसे चुनौतीपूर्ण भूमिका सतीश शाह की थी, जिन्हें अधिकांश फिल्म में लाश बनना था। निर्देशक की कल्पनाशीलता के साथ-साथ यह सतीश की अभिनय प्रतिभा का ही कमाल था कि उन्होंने लाश के रोल में भी ऐसे प्राण फूँके कि हँसते-हँसते दर्शकों के पेट में बल पड़ गए।
कार चलाने की मुद्रा में ताबूत में बैठी लाश, स्केट पर सवार बुर्कानशीं बन दौड़ाई जा रही लाश, चीरहरण के लिए धृतराष्ट्र के दरबार में लाई गई लाश के रूप में सतीश की मुखमुद्रा और बॉडी लैंग्वेज भुलाए नहीं भूलती। यूँ तो 'जाने भी दो यारों' अपने आप में क्लासिक है लेकिन यदि नहीं भी होती, तो सतीश शाह की वजह से बन जाती।

जाने भी दो यारों 1983 में आई ऐसी फिल्म थी जिसे देखकर आज भी दर्शक अपनी हंसी रोक नहीं पाते. दरअसल इस फिल्म में भारतीय राजनीति, नौकरशाही, समाचार मीडिया और समाज में फैले भ्रष्टाचार पर एक गहरा व्यंग्य था. फिल्म उजागर करती थी कि सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार किस हद तक फैला हुआ है. कुंदन शाह ने इन दोनों फोटोग्राफरों को आम आदमी का नुमाइंदा बनाकर दिखाया था कि किस तरह से आम आदमी भ्रष्ट लोगों की बलि चढ़ जाता है और फिल्म के अंत मे सारे दोषों को इन दोनों के सर मढ़ कर,जेल पहुंचा दिया जाता है|

80 के दशक मे बनी यह फिल्म आज के परिदृश्य मे और भी अधिक प्रासंगिक है|उस समय तो मीडिया के नाम पर समाचार पत्र और दूरदर्शन ही थे|सूचना का अधिकार आम आदमी के पास नहीं था|आज जब सोशल मीडिया और आरटीआई का जमाना है उसके बाद भी देश के गली मोहल्लों मे अवैध बिल्डिंगें सर उठाए खड़ी हो रही है और आम आदमी के पास तमाशा देखने के अलावा कोई विकल्प नहीं है|कोर्ट के आदेशों के बावजूद शहरों के मास्टर प्लानों की धज्जिया उड़ाई जा रही है|

फिल्म की कहानी विस्तार से!!

विनोद (नसीरुद्दीन शाह) और सुधीर (रवि वासवानी) मुंबई में हाजी अली क्षेत्र में एक फोटो स्टूडियो खोलते हैं.लेकिन उन्हे कोई काम नहीं मिलता. 'खबरदार' समाचार का सह संपादक कामदार (राजेश पुरी) उनके स्टूडियो में आता है, और कहता है कि
"आप लोगों के लिए काम लेकर आया हूँ. बड़ी मुश्किल से एडिटर को राजी किया है, लेकिन ये ट्रायल असाइनमेंट है."
दोनों उसे आश्वस्त करते हैं, "वी विल डू अवर बेस्ट."
कामदार, राजदाराना अंदाज में कहता है, **"हमारे यहाँ हरेक काम बड़ा सीक्रेट होता है. शहर के बड़े- बड़े लोगों की पोल खोली जाती है. तरनेजा शहर का सबसे बड़ा बगुला भगत, भ्रष्टाचारी."**

इस प्रकाशन का काम, धनी-मानी लोगों के रहस्य को उजागर करना है. शोभा (भक्ति बर्वे) इस अखबार की संपादक है. वह भ्रष्ट बिल्डर तरनेजा (पंकज कपूर) और नगर आयुक्त डिमेलो (सतीश शाह) के बीच चल रही स्टोरी पर काम कर रही होती है.

टावर की चौबीसवीं मंजिल नहीं बना सकते

सीमेंट के रेशियो को लेकर तरनेजा , अपने स्टाफ से कहता है, "ऐसी बातें दबी आवाज में कही जाती हैं. कच्छ के रेगिस्तान का नाम सुना है? उसे बढ़ने मत दो.""दूसरे का नुकसान और अपना फायदा" बिजनेस का मूल मंत्र उसे सिखाता है.

तरनेजा और डिमेलो के संबंधों का दृश्य है. डिमेलो, बहुमंजिली इमारत पर ऑब्जेक्शन करता है, 'टावर की चौबीसवीं मंजिल नहीं बना सकते.'

तरनेजा इस बात को यह कहते हुए खारिज कर देता है, "कानून आम आदमी के लिए होता है, तरनेजा के लिए नहीं."

उनमें गुफ्तगू होती है, जिसके नतीजे में म्युनिसिपल कमिश्नर कहता है, "चौबीसवीं क्या पच्चीसवीं मंजिल भी बनाओ."

तनेजा, राउंड फिगर में यकीन रखता है. यह उसका उसूल है, उसका प्रिंसिपल है. जब डिमेलो, पच्चीसवीं मंजिल में आ रही अड़चन की बात कहना चाहता है, तो तरनेजा उसके सामने एक सिचुएशन रखता है; "माना कि आज आपका जन्मदिन है और हम आपको निन्यानबे हजार नौ सौ निन्यानबे का चेक देते हैं, तो यह फिगर आपको अटपटी सी लगेगी." राउंड फिगर का गेम बताकर वह डिमेलो को चमत्कृत कर देता है. इस पर डिमेलो कहता है, 'लॉजिक में आपसे जीतना मुश्किल है.'

'स्विट्जरलैंड का केक अच्छा होता है.'

वह बिल्डर को बांद्रा के कब्रिस्तान में भी प्रोजेक्ट खड़ा करने की सलाह देता है.

मृतकों के रिहायशी इलाके पर अवैधानिक कब्जे को वे यह कहते हुए जस्टिफाई करते हैं 'बेसमेंट में तो वही रहेंगे.' ऐसा कहकर वे बात को हल्की करने की कोशिश करते हैं.

खबरदार मैगजीन की संपादक शोभा दोनों फोटोग्राफर्स को चेक करती है, कि वे काम के भरोसे के लायक हैं कि नहीं. वह अनुमान लगा लेती है कि, वे फोटोग्राफी का काम अच्छा कर लेते हैं. वह उन्हें सीक्रेट मीटिंग की बातें रिकॉर्ड करने और फोटोग्राफ्स लेने का जिम्मा सौंपती है.

रिवाइज्ड टेंडर्स और ओरिजिनल टेंडर्स की दरों पर तरनेजा और म्यूनिसिपल कमिश्नर के बीच गोपनीय बातचीत चलती है. रेट्स डबल कर देने पर डिमेलो नौकरी पर खतरा जाहिर करता है, "मरवाने का है क्या."

तो बिल्डर इसका औचित्य साबित करते हुए कहता है, **"महंगाई कितनी बढ़ गई है. स्टील, ट्रांसपोर्ट, लेबर, सीमेंट सब के दाम डबल हो गए हैं."**

वह तंज कसते हुए कहता है, "यहाँ तक कि तुम्हारे भी."

तभी विनोद और शोभा, टाइम मैगजीन के प्रतिनिधि बनकर म्यूनिसिपल कमिश्नर का इंटरव्यू लेने आते हैं. डिमेलो ओवरएक्साइटिड सा दिखता है. वह छपास का रोगी दिखाई देता है. वह आनन-फानन में तरनेजा एंड पार्टी को बाथरूम में बंद कर देता है. डिमेलो, टाइम मैगजीन के संवाददाताओं को स्विट्जरलैंड का केक खिलाता है. तभी खिड़की पर सुधीर भौंकने की आवाज करता है. विनोद, केक बाहर फेंकता है. सुधीर और कामदार टुकड़े को लपकते हैं. उसके डिफरेंट पोज में फोटो लेने के बहाने सुधीर, टेंडर के फोटोग्राफ्स ले लेता है. टाइम के छद्म कॉरेस्पोंडेंट्स के जाते ही, एक अन्य बिल्डर आहूजा(ओम पुरी) म्यूनिसिपल कमिश्नर से मिलने आ टपकता है. वह ठेठ पंजाबी लहजे वाली बोली बोलता है, **"हैल्लो मिस्टर डिम्मैल्लो. हेल्लो, हाउ आर यू."**

तरनेजा रोशनदान से झाँक लेता है. वह उसका कड़ा व्यापारिक प्रतिद्वंदी है, क्रुशियल राइवल. डिमेलो जब उसकी आम शोहरत पर सवाल खड़ा करता है, तो आहूजा बड़ी बेफिक्री वाले अंदाज में कहता है, **"कम्मौन डिम्मेल्लो! इस धंधे में घपला कौन नी करता."**

डिमेलो कहता है, **"तुम पीता बहुत है. पिएगा तो हमारा बात कैसे सुनेगा."**

आहूजा बात स्पष्ट करते हुए कहता है, **"कमॉन मिस्टर डिम्मेल्लो, डू नोट बी फन्नी. मैं मूँ से पित्ता हूँ. कान से नी पित्ता."**

"मैं तरणेज्जा से दुगुनी कीमत दे सकता हूँ." कहकर वह चार फ्लाईओवर का प्रोजेक्ट हथिया लेता है.

"मेरा केक, मेरे दुश्मन को खिला रहा है" कहकर तरनेजा जल-भुनकर रह जाता है.

खबरदार की एडिटर ओरिजिनल टेंडर और रिवाइज्ड टेंडर की डिटेल्स को कंपेयर करके घालमेल को पकड़ लेती है. वह विनोद को आगे की जानकारियाँ हासिल करने भेजना चाहती है. "जज्बाती लगाव तो है नहीं. वो तो हमें ही है" कहकर विनोद वास्तविकता व्यक्त करता है. जब वह धमकी देती है कि 'भूखों मरोगे', तो विनोद असलियत जाहिर करते हुए कहता है, "भूखे तो वैसे ही मर रहे हैं. अभी थोड़ी देर पहले गिर पड़ा था. कमजोरी की वजह से."

फिर वह ईमानदार, बहादुर, जांबाज़ कहकर उसकी भावनाएँ उभारने की कोशिश करती है और प्रायः उसमें कामयाब हो जाती है. वह उसे सपनों का साथी घोषित करती है. विनोद इस झाँसे में आ जाता है. वह जब उससे दिल की धड़कन सुनने को कहती है, तो विनोद, तरनेजा और फोटोग्राफ्स की बातें दोहराता है. तत्पश्चात् वह ऐन मुद्दे पर आते हुए कहती है, "तो फिर तुम तरनेजा के बंगले में जाओगे ना."

तरनेजा -आहूजा के बीच कोई समझौता होने वाला है. तरनेजा को खबर है कि, चारों पुलों के कांट्रेक्ट आहूजा को मिलने वाले हैं. वह पासा फेंकते हुए कहता है, **"हम लोग एक ही धंधे में है. क्यों न मिलकर काम करें. अच्छा भाईचारा निभेगा."**

इस पर आहूजा पुरानी बातों को याद करते हुए उस पर तोहमत मढ़ता है, **"अच्छा पाईचारा निभाया तूने. ब्लैक लिस्ट करवा दिया था मुझे. तब कहाँ गया था, तेरा पाईचारा. तेरे तोते उड़ गए हैं, इसलिए इस तरह की बात कर रहा है."**

बातचीत में जाहिर होता है कि, वह इस बार भी उसे ब्लैकलिस्ट करवाने का इरादा रखता है. वह उसे किसी और प्रोजेक्ट का लालच देता है.

विनोद आहूजा को लेकर अशोक के मार्फत तरनेजा के मन में भ्रम पैदा कर देता है. वह अशोक को एक टॉप सीक्रेट बताता है कि, **आहूजा नकली बालों की विग पहनता है और उसने बालों में टेंडर के फोटोग्राफ छुपाए हुए हैं.** दोनों उसके बाल खींचने को लेकर अच्छी- खासी रस्साकशी करते हैं. कमरे में गहमागहमी मच जाती है. आखिर में असिस्टेंट कमिश्नर श्रीवास्तव के मार्फत दोनों कॉन्ट्रेक्टर्स को पता चलता है कि, डीमेलो ने रिश्वत लेकर कॉन्ट्रैक्ट्स किसी तीसरे आदमी को दे दिये हैं.

दोनों पार्क में टहल रहे होते हैं. विनोद के यह कहने पर कि, शोभा कितना बड़ा सामाजिक कार्य कर रही है. सुधीर उसे केला खिलाने की पेशकश करता है. उसके मना करने पर सुधीर कहता है, "ये पहली कमाई का केला है. खा लो."

इसी बीच वे किसी फोटोग्राफी कंटेस्ट का विज्ञापन

देखते हैं. विनोद इसके लिए अनिच्छा सी जताता है– “इनाम-विनाम कुछ मिलता तो नहीं, टी-सेट पकड़ा देंगे.”

जब सुधीर फाइव थाउजेंड इन कैश बताता है, तो वह इस काम के लिए राजी हो जाता है. वे शहर भर के फोटो खींचते हैं. वह कहता है, ‘मिल गया पाँच हजार का शॉट.’

बंदर मदारी के इशारे पर प्रस्तुतियाँ दे रहा होता है.

दोनों फोटो डिवेलप कर रहे होते हैं. वे प्राइज विनिंग फोटो की संभावना तलाश रहे होते हैं. तभी विनोद कहता है, “मेरी तस्वीर देखिए ह्यूमन फीलिंग्स के हिसाब से..”

तभी वह कहता है, “ये चेककोट पहने कौन खड़ा है. हाथ में कैमरा है कि, पिस्तौल है. गड़बड़ लगता है.”

सुधीर गौर से देखता है, “विनोद, ये तो वाकई पिस्तौल है.”

वे फोटो को एनलार्ज करते हैं. सुधीर यह देखकर हैरत में पड़ जाता है कि, संदिग्ध व्यक्ति कोई नहीं और नहीं, बल्कि तरनेजा है.

वे रात में उसी पार्क में जा पहुँचते हैं. कुत्तों-सियारों के रोने की आवाज सुनकर सुधीर कहता है, “विनोद, चल वापस घर चलते हैं.”

विनोद के प्रोत्साहन पर दोनों पार्क के अंदर चले जाते हैं.

विनोद कहता है, “ये वही डाली है, जिस डाली से तूने फोटो खींची थी.”

मजे की बात यह है कि, सुधीर के आनाकानी करने पर, वह हमेशा उस पर ‘मैं बड़ा हूँ कि, नहीं’ का रोब जमाता है. वे सिचुएशन के हिसाब से, उसी स्थान पर खड़े होते हैं. वे याद करते हैं, “बंदर के हाथ में आईना था. फोटो इधर से खींची थी. मतलब खून हमारे पीछे हुआ है. इसका मतलब, लाश हमारे पीछे है.”

सुधीर, भय के मारे उसे हतोत्साहित करता हुआ नजर आता है. विनोद कहता है, **“लाश, हमारा क्या बिगाड़ लेगी.”**

किसी तरह कह- सुनकर विनोद, सुधीर को राजी कर देता है. तभी सुधीर को पत्ते पर खून दिखाई देता है. मौका-ए- वारदात पर उन्हें एक कफलिंक मिलता है.

ब्रिज डेडीकेटेड टू डिमेलो. डिमेलो पुल का उद्घाटन नया कमिश्नर श्रीवास्तव करता है. वह भाव भीना भाषण देता है, **“गरीब लोग पुल के नीचे घर बसायेंगे..”**

“मिस्टर डिमेलो इलाज कराने स्विट्जरलैंड गए थे, बीमारी से उनका देहांत हो गया..”

"वे कहा करते थे, किसी देश की पहचान अगर कोई चीज है, तो वो है गटर.. वे गटर के लिए जिए, गटर के लिए मरे. उनकी याद में एक दिन के लिए शहर के सारे गटर बंद कर देंगे. आप लोग एक दिन पहले पानी भर के रखें."

यह वही स्पीच है, जो कुंदन शाह के निजी अनुभव से प्रेरित बताई जाती है.

वहीं पर एक मीडियापर्सन तरनेजा से सवाल पूछता है, **"हर कामयाबी के पीछे कोई-न-कोई अपराध होता है."**

"हर कामयाबी के पीछे कोई-न-कोई अपराध होता है."

इस पर तनेजा कहता है, **"आप तो किताबी बातें करते हैं."**

वह फिर से सवाल खड़े करता है, **"अस्सी करोड़ की भाग्यरेखा हजार लोगों के हाथ में क्यों है. मिस्टर तरनेजा , यह नरक आपका ही बनाया गया है."**

वह नशाबंदी पर भी सवाल खड़ा करता है, तो तरनेजा , "मैं ऐसे फजूल सवालों के जवाब नहीं देता" कहकर हाथ झाड़ लेता है. "मैं ऐसे क्रॉस एग्जामिनेशन का जवाब नहीं देता."

पुल के उद्घाटन के इस मौके पर सुधीर-विनोद को दूसरा कफलिंक मिलता है. कार्य-कारण संबंध के हिसाब से स्टोरी डिवेलप करने में उन्हें ज्यादा देर नहीं लगती. वे रात में उस स्थान पर खोदते हैं. ताबूत में शव बरामद होता है. वे डिमेलो के शव की पहचान कर लेते हैं और कई फोटोग्राफ लेते हैं, ताकि सनद रहे और वक्त जरूरत काम आए. वे ताबूत को अपने कब्जे में ले लेते हैं, ताकि तरनेजा को एक्सपोज किया जा सके. दोनों पुल के नीचे बैठकर फुर्सत की सांस लेते हैं. उत्साह से लैस होकर जुमले बोलते हैं, **"जेल जाएंगे, सब-के-सब. इनाम मिलेगा. सच्चाई की जीत होगी और बुराई की हार."**

अस्सी करोड़ की भाग्यरेखा हजार लोगों के हाथ में क्यों है. मिस्टर तरनेजा , यह नरक आपका ही बनाया गया है."

तभी बगल से ट्रेन गुजरती है और ताबूत सरकते हुए सड़क के दूसरे कोने की तरफ की चला जाता है.

लाश गायब हो जाती है. तभी हवलदार, "क्या कर रहा है, यहाँ" कहकर उनसे कैफियत तलब करता है.

"आधी रात को कुछ नहीं करने का मतलब मालूम, आवारागर्दी होता है." वह मराठी लहजे में उनसे सवाल करता है, लगभग इंटेरोगेशन करता है. उनके पास होने को तो कुछ भी नहीं मिलता, लेकिन वह उनसे टिकट के पैसे तक झटक लेता है.

विनोद कहता है कि, विदाउट टिकट नहीं जा सकते क्योंकि यह गैर कानूनी है, तो इस पर विमर्श उठ खड़ा होता है. विनोद अपना आक्रोश जताते हुए कहता है, "जी चाहता है मशीनगन लेकर.."

शोभा, तनेजा को ब्लैकमेल करना चाहती है. उसे विश्वास है कि, एक बहुत बड़ा हथियार उसके हाथ लग गया है.

ट्रेन गुजरने के बाद, ताबूत वापस सड़क के बीचो-बीच आ जाता है.

यह हिंदी सिनेमा का अद्वितीय दृश्य है. आहूजा, शराब के नशे में चूर होता है. वह गाड़ी से हॉर्न देता है. चिल्लाता है, "ओह्हो! किसने बीच में गड्डी लगा दी."

लड़खड़ाते कदमों से ताबूत के पास जाकर कहता है, "ओ पाई, गुड आफ्टरनून, पहलवान! क्या प्रॉब्लम है."

वह दरियाफ्त करता है, "कौन सा मॉडल है? स्पोर्ट! मेरे पास ऑस्टिन है."

"ओल्ड इज गोल्ड. नया मॉडल है, फिर भी गाड़ी खराब कर दी."

गड्डी चेक करने के बहाने कहता है, "कार्बोरेटर तो ठीक है, इंजन भी ठीक है."

फिर इस अंदाज में कहता है, मानों उसने असली रहस्य पकड़ लिया हो, "गाड़ी पंचर कर दी."

उसके रिऐक्ट न करने पर वह उसे टोकता है, "ओए, पाईसाब! मौनव्रत रक्खा है क्या. लो सिग्रेट पिओ."

वह डेडबॉडी के मुँह पर सिगरेट लगाकर सुलगा लेता है.

"यार, तू तो बिलकुल थका-मरा लग रहा है."

इतना ही नहीं, वह उसे मदद की पेशकश भी करता है, "मैं अभी स्टेपनी लेके आता हूँ."

वह इंसानियत दिखाते हुए कहता है, "सात्थी तो सात्थी की मदद क्रेगा."

वह ताबूत का पहिया बदलने की कोशिश करता है, "मैंने जिंदगी में बहुत स्टेपनियाँ बदली हैं."

पहिया चढ़ाने के बाद एडजज करते हुए कहता है, "ये तो थोड़ा बड़ा है. पहिया बोनट तक पहुँच ग्या."

इसमें विफल होने पर वह विकल्प प्रस्तुत करता है, “अपने पास और भी तरीक्के हैं, ये स्पोर्ट कार है. इसमें और कोई पहिया कैसे फिट हो सकता है.”

फिर उससे नाराजगी सी जाहिर करते हुए कहता है, “क्यों कहा था, मुझे पहिया लाने के लिए.”

फिर दरियादिली भी दिखाता है, “मैं तेरे को घर ले चलता हूँ.”

वह अपनी गाड़ी से टू-चेन करके ताबूत को सड़क पर खींचता हुआ ले जाता है. साथ ही शिष्टाचारवश मजबूरी भी जताता है, “मैं तेरे को आगे बिठा लेता, लेकिन पीछे कोई स्टेरिंग संभालने वाला होना चाहिए. देखो रस्सी टूट जाए, तो हौरन दे देना.”

वह उसे डायरेक्शन बताते हुए चलता चला जाता है.

दोनों फोटोग्राफर, संपादक को लाश के बारे में जानकारी देते हैं. एडिटर फौरन तरनेजा को फोन करती है. **“मेरे पास तस्वीर है. लाश मेरे कब्जे में है.”** ऐसी बातें सुनकर तरनेजा उससे समझौता कर लेता है.

“हम सबका मकसद एक ही तो है, मि.तरनेजा .”

सौदेबाजी तय हो जाती है. वह उन्हें डिनर पर बुलाता है.

इधर वह अपने असिस्टेंट अशोक से कहता है, “उनकी इतनी खातिर करो कि, उन्हें कोई परेशानी ना हो.”

अशोक तीनों की कुर्सियों के नीचे टाइम बम फिक्स कर देता है.

सुधीर, नादानी में टाइम बम को मेज के ऊपर रख देता है. अशोक चिल्लाता है, “टाइम बम में टाइम बहुत कम है.”

वे काउंटडाउन गिनते हैं. उससे पहले ही मौका ए वारदात पर श्रीवास्तव हाजिर हो जाता है. टाइम बम, संयोग से उन्हीं के ऊपर फट जाता है.

अखबार के दफ्तर में पहुँचकर शोभा के मुँह से निकल जाता है, ‘मेरा तो दस लाख का नुकसान हो गया.’

तभी उसे आहूजा का फोन आता है. दोनों में सौदेबाजी होती है, “हम दोनों को एक-दूसरे की जरूरत पड़ेगी.”

आहूजा उसे लेटेस्ट खबर सुनाता है. वह टेलीविजन पर खबर सुनती है, **‘तेरह करोड़ के खर्चे से बना डिमिलो पुल टूटकर गिर गया.’**

संवाददाता के सवाल के जवाब में तरनेजा कहते हुए दिखाई पड़ता है, **“गिरने की वजह तो इंक्वायरी कमेटी बताएगी.”**

अब बात यहाँ तक आ पहुँचती है कि, जीत उसकी होगी जिसके पास लाश होगी.

दोनों फोटोग्राफर, संपादक की बुराई के खिलाफ लड़ने में मदद कर रहे होते हैं, लेकिन शोभा उनसे कहती है, **“अपनी मदद की कीमत बताओ.”**

उसका समाज सेविका का बाना उतर जाता है. वे खिन्न होकर कहते हैं, **“आपमें और तरनेजा में कोई फर्क नहीं.”**

वे दुःखी मन से बाहर निकल जाते हैं. “हम निकम्मे हैं. हमारी जगह सड़कों पर है.”

उस दौर के व्हिसल ब्लोअर्स पर आने वाले खतरों को फिल्म में बड़ी खूबसूरती से दिखाया गया है.

दोनों, हम होंगे कामयाब गीत को गाते हैं. खास बात यह है कि, जब भी वे निराशा में डूबते हैं, तो उस भाव से उबरने के लिए वे इसी गीत का सहारा लेते हैं. फिल्म में कम-से-कम चार बार, वे इस गीत को गाते हैं.

दोनों अपना हिसाब लेने खबरदार दफ्तर में जाते हैं, तभी वहाँ पर आहूजा भी आ पहुँचता है. आहूजा, शोभा को बताता है कि पुल गिरने में कोई सबैटोज नहीं हुआ है. वह अपने खास पंजाबी लहजे वाली हिंदी में बताता है, **“रेत में सीमेंट मिलात्ता है, पुल तो टुट्टेगाई.”**

वह उस रात की घटना को याद करते हुए कहता है, “मैंने तो एक बंदे को लिफ्ट भी दी थी. बोलताई नहीं था.”

बातचीत में उन्हें मालूम हो जाता है कि, वह डिमेलो की लाश थी. आहूजा चौंकते हुए कहता है, “इसीलिए वो आदमी बात नहीं कर रहा था.”

चोरी से उनकी बातें सुनकर सुधीर- विनोद, उसके गेस्ट हाउस में पहुँचकर ताबूत से शव निकाल लेते हैं. वे उसे लट्ठेवाली नाईट ड्रेस पहनाते हैं.

सबको लाश पर कब्जा चाहिए. सभी स्टेकहोल्डर्स ताबूत के पीछे मेन रोड पर दौड़ लगाते हैं. वे दोनों उसे स्केट्स पहनाकर, दूसरी दिशा में लेकर भागते हैं. वे उसे पर्दानशीन बना लेते हैं और आखिर में थिएटर में ले जाते हैं, जहाँ महाभारत के सभा-पर्व

का मंचन चल रहा होता है. धृतराष्ट्र अपनी रट लगाए रहते हैं,

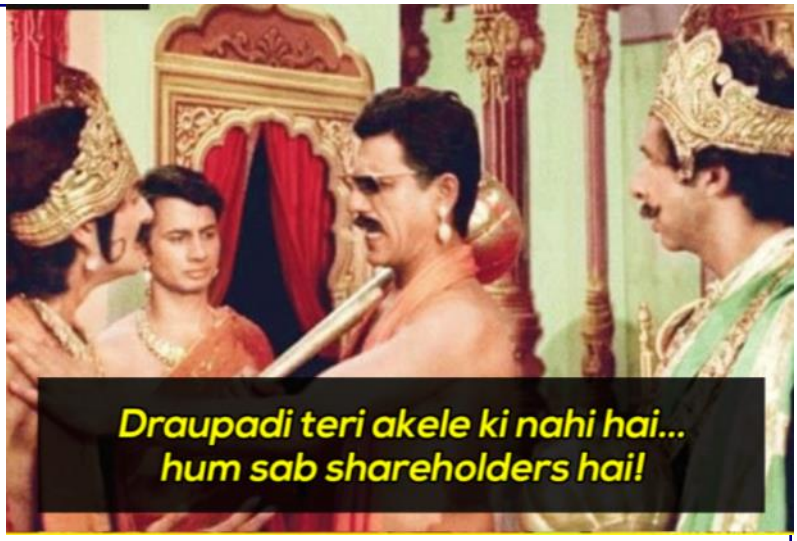

"ये क्या हो रहा है, बेटा दुर्योधन."

दुःशासन (विधु विनोद चोपड़ा) दुर्योधन को खबर देता है, 'द्रौपदी ने भरी सभा में आने से इनकार कर दिया है.'

उधर भीम सो रहा होता है. सुधीर– विनोद, डिमेलो की लाश का मेकअप करते हैं, तभी दुःशासन उसे हाथ खींचते हुए मंच पर ले जाता है. लाश उसके ऊपर ढुलकने लगती है. नाटक, स्क्रिप्ट से भटककर, कहाँ-से-कहाँ पहुँच जाता है.

विनोद, दुर्योधन का मेकअप करके मंच पर कूद पड़ता है. वह द्रौपदी के चीर-हरण का सख्त विरोध करता है, "ठहरो दुःशासन, ऐसी सती की जय हो.."

सभी स्टेकहोल्डर्स अपनी-अपनी सहूलियत के हिसाब से कोई-न- कोई रुप धरकर नाटक में सक्रिय होकर भाग लेते हैं और स्वतः स्फूर्त संवाद बोलते चले जाते हैं. नाटक का निर्देशक परेशान होकर रह जाता है, 'दुर्योधन, यार क्या कर रहे हो. व्हाट डू यू मीन आई ड्रॉप दिस आइडिया.'

दुःशासन, दुर्योधन के पास आकर फुसफुसाकर कहता है, "अबे कौन है तू."

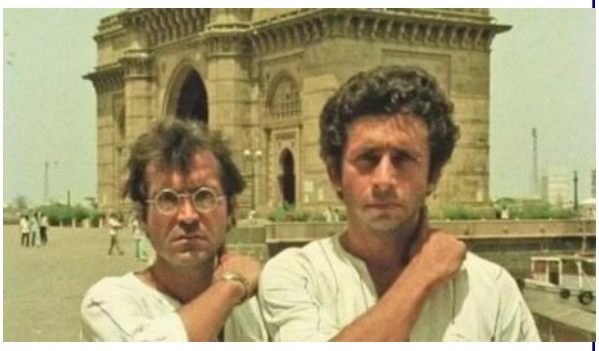

तो दुर्योधन गदा लहराते हुए कहता है, "मुझे हर हाल में द्रौपदी की लाज रखनी है."

धृतराष्ट्र फिर से चिल्लाते हैं, "ये क्या हो रहा है."

तभी आहूजा, भीम बनकर कौरवों को कड़ी फटकार लगाता है, "ओए धृतराष्ट्र के पुत्तर, द्रौपदी को वापस कर."

वह अर्जुन के धनुष-बाण तोड़ देता है, तो अर्जुन रोते हुए कहता है, "मेरे तीस रुपए का नुकसान कर दिया."

यहाँ तक की भीम (आहूजा) युधिष्ठिर के उसे नैतिक मर्यादा में रोकने की कोशिश को लेकर उसका सिर फोड़ देता है.

क्लाइमेक्स में तरनेजा , द्रुपद बनकर आता है और यह प्रस्ताव रखता है, 'द्रौपदी मेरे साथ अपने मायके जाएगी.'

तभी परदा गिरता है. कामदार(राजेश पुरी) चोबदार के वेश में जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के दरबार लगने की घोषणा करता है. सलीम-अनारकली का मंचन शुरू हो जाता है. जब नाटक गड्डमड्ड होकर रह जाता है, तो नाट्य मंडली पुलिस को बुलाती है. कमिश्नर श्रीवास्तव, सभी स्टेकहोल्डर्स में समझौता करा देता है. "आपसी डिफरेंसेज को भूलकर, इस झगड़े को यहीं खत्म करते हैं." कहकर वह सौदेबाजी तय करा लेता है. वे कहते हैं, "छह महीने में लोग सब भूल जाएंगे."

सारे अपराधों का दोष, आम आदमियों विनोद और समीर के सिर पर मढ़ दिया जाता है. वहीं पर पर्दे पर सत्यमेव जयते उकेरा हुआ दिखाई पड़ता है.